जल बिना सब सून

ऊषा सिंह

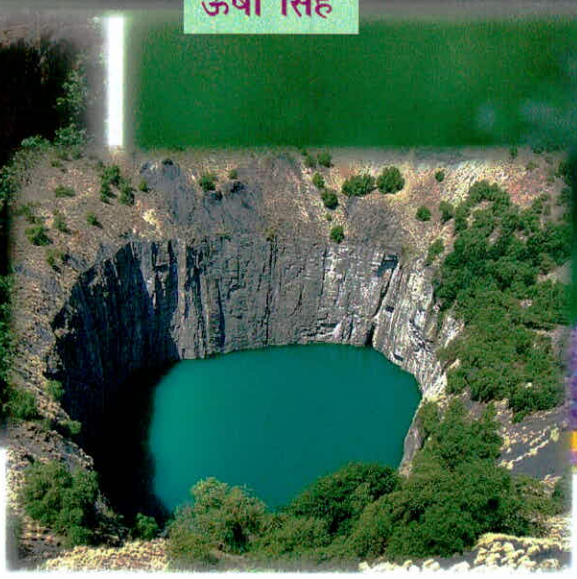

जल जीवन में
जल मरण में,
जल बिना सब सून।
जल जैसी नहीं धार, जल जैसी मार।
घोर घुमड़ मेघों में, झर-झर बहता
झरनों में।
कल-कल करता नदियों में, शांत
शांत सागर में।
आग बुझाये जल,
अन्न उगाये जल,
प्यास बुझाये जल।

जल जीवन में,
जल मरण में,
जल बिना सब सून।
जल बहे तो निर्मल धारा जल करे
जब ताडंव।

समाहित हो सब जल में, हाहाकार
करे जग सारा।
जल जैसा ना बैरी कोई, जल जैसा
ना प्रेमी।
जल से प्रलय,
जल में सब हो विलय,
जल बिना नहीं कल।

जल जीवन में
जल मरण में,
जल बिना सब सून।
फट जाये मेघों में, ना हो पाये
विस्तार।
रूठे जन जीवन से, बन जाये
मरूस्थल थार।

ना करो इसका तिरस्कार।
हाथ जोड़ कर वरूण देव को, सब
जन करो नमस्कार।
जल का संचय करते,
अब भूजल का स्तर भर ले,
धरा को प्रफुल्लित करले।
जल जीवन में,
जल मरण में,
जल बिना सब सून।
धन का संचय करते हो, जल की
बरबादी करते हो
आओ मिलकर कर लें निश्चय, जल
की बूंद-बूंद का संचय।
क्या धन से प्यास बुझा लोगे, क्या
धन से अन्न उगा लोगे।

क्या बगिया में, बिन जल फूल खिला
लोगे।
बिन जल सुबह नहीं,
बिन जल नहीं शाम,
बिन जल नहीं नहाना धोना
बिन जल ना कोई काम।
जल जीवन में,
जल मरण में,
जल बिना सब सून।

संपर्क करें:
श्रीमति ऊषा सिंह
ए-42/1, आई.आर.आई. कॉलोनी
(निकट प्रताप नर्सिंग होम)
रुड़की-247667
मो.न. : 7520549140, 8193819434